

## रोमी अफसर का अकीदा

इंजील : लुकास 7:1-30

लोगों को तालीम देने के बाद, ईसा<sup>(अ.स)</sup> कफ़र्नहूम के एक कस्बे में गए।<sup>(1)</sup> वहाँ पर एक बहुत बड़ा रोमी फ़ौजी अफ़सर रहता था। उस फ़ौजी अफ़सर का एक नौकर बहुत बीमार था और अपनी आखिरी साँसें गिन रहा था। वो अफ़सर अपने नौकर को बहुत पसंद करता था।<sup>(2)</sup> जब उसको ईसा<sup>(अ.स)</sup> के बारे में पता चला, तो उसने कुछ इज़्जतदार यहूदी रहनुमाओं को उनके पास भेजा। वो चाहता था कि वो लोग ईसा<sup>(अ.स)</sup> से कहें कि वो इस मरते हुए आदमी को बचा लें।<sup>(3)</sup>

वो लोग ईसा<sup>(अ.स)</sup> के पास पहुंचे और उनसे अफ़सर की मदद की भीक माँगी। उन लोगों ने कहा, “वो अफ़सर इस लायक है कि आप इसकी मदद करें।<sup>(4)</sup>” वो कौम के लोगों से बहुत अच्छा बर्ताव करता है और उसने हमारे लिए एक इबादत गाह भी बनवाई है।” ईसा<sup>(अ.स)</sup> उनके साथ जाने के लिए तैयार हो गए।<sup>(5)</sup> जब ईसा<sup>(अ.स)</sup> उस अफ़सर के घर के करीब पहुंचे तो उस अफ़सर ने अपने दोस्तों को भेज कर कहलवाया, “मालिक मेरे लिए कुछ खास करने की ज़रूरत नहीं है। मैं इतना नेक नहीं हूँ कि आप मेरे घर के अंदर आएँ।<sup>(6)</sup> मैं इसके लायक नहीं हूँ, इसलिए आपकी खिदमत में भी हाज़िर नहीं हो पाया। आपको बस वहीं से हुक्म देने की ज़रूरत है और मेरा नौकर वहीं से ही ठीक हो जाएगा।<sup>(7)</sup> मैं ये इसलिए जानता हूँ कि मैं भी किसी के हुक्म पर अमल करता हूँ और मेरी सरदारी में जो फ़ौजी हैं तो मैं उनको हुक्म देता हूँ और वो उस पर अमल करते हैं। मैं अगर किसी फ़ौजी से कहूँ, ‘यहाँ आओ,’ तो वो आ जाता है और अगर कहूँ, ‘वहाँ जाओ,’ तो चला जाता है। अगर मैं अपने किसी नौकर से किसी काम को करने का हुक्म देता हूँ, ‘ये करो,’ तो मेरा नौकर मेरा कहना मानता है।<sup>(8)</sup> जब ईसा<sup>(अ.स)</sup> ने उसकी इस बात को सुना तो वो हैरान रह गए और साथ मौजूद लोगों से कहा, “इसके जैसा ईमान मैंने कहीं नहीं देखा, इस्राईल में भी नहीं।<sup>(9)</sup> जो दोस्त ईसा<sup>(अ.स)</sup> के पास आए थे, वो घर वापस चले गए और वहाँ जा कर देखा कि वो नौकर ठीक हो गया था।<sup>(10)</sup>”

## मौत पर कुदरत

अगले दिन ईसा<sup>(अ.स)</sup> और उनके शागिर्द नईन नाम के एक शहर पहुंचे। उनके साथ बहुत सारे लोग सफ़र कर रहे थे।<sup>(11)</sup> जब ईसा<sup>(अ.स)</sup> उस कस्बे के पास पहुंचे तो उन्होंने देखा कि लोग एक लड़के की लाश को क़ब्रिस्तान ले जा रहे हैं और कस्बे के बहुत से लोग मिट्टी में शरीक हैं। वो एक बेवा माँ का इकलौता बेटा था।<sup>(12)</sup> जब ईसा<sup>(अ.स)</sup> ने उस औरत को देखा तो उन्हें बहुत अफ़सोस हुआ, और उन्होंने उस औरत से कहा, “रो नहीं।<sup>(13)</sup> जब वो उस लड़के की लाश के करीब पहुंचे तो वो सब लोग वहीं रुक गए। ईसा<sup>(अ.स)</sup> ने उस मरे हुए बेटे को पुकार कर कहा: “‘ए नौजवान, मैं तुमसे कहता हूँ, उठ खड़े हो!’<sup>(14)</sup> तब वो लड़का उठ कर बैठ गया और बातें करने लगा। ईसा<sup>(अ.स)</sup> ने उस बच्चे को उसकी माँ को दे दिया।<sup>(15)</sup> वहाँ मौजूद सब लोग डर कर सहम गए। वो सभी अल्लाह ताअला की तारीफ़ करने लगे और बोल पड़े, “एक अजीम नबी हमारे साथ है! और अल्लाह रब्बुल करीम अपने बन्दों की देखभाल कर रहा है।<sup>(16)</sup> ईसा<sup>(अ.स)</sup> की इस करामत की ख़बर पूरे यहूदिया और उसके आस-पास के इलाके में फैल गई।<sup>(17)</sup>”

याह्या<sup>(अ.स)</sup> कौन हैं?

याह्या<sup>(अ.स)</sup> के एक शागिर्द ने उन्हें आ कर इसके बारे में बताया। याह्या<sup>(अ.स)</sup> ने अपने दो शागिर्दों को<sup>(18)</sup> ईसा<sup>(अ.स)</sup> से ये पूछने भेजा: “क्या आप वही हैं जिसके बारे में हमने सुना था कि आने वाला है, या हम किसी दूसरे का इंतज़ार करें?”<sup>(19)</sup> तो वो शागिर्द ईसा<sup>(अ.स)</sup> के पास आए और पूछा, “क्या आप वही हैं जिसके बारे में हमने सुना था कि आने वाला है, या हम किसी और का इंतज़ार करें?”<sup>(20)</sup>

उन दिनों ईसा<sup>(अ.स)</sup> बीमारों और लाचारों का इलाज कर रहे थे। वो लोगों को गन्दी रूहों से निजात दे रहे थे और उन्होंने बहुत से अंधों को आँखों की रोशनी अता करी थी।<sup>(21)</sup> उन्होंने याह्या<sup>(अ.स)</sup> के शागिर्दों से कहा, “जाओ और जा कर उन्हें ये सब बताओ जो तुमने देखा और सुना है, उन्हें बताओ: अंधे अब देख सकते हैं। जिनको लकवा मार गया था, अब वो चल सकते हैं। कोढ़ी ठीक हो गए हैं। बहरे सुन सकते हैं और मुर्दों को फिर से ज़िन्दगी मिल गई है। ग़रीबों को खुशख़बरी सुना दी गई है।<sup>(22)</sup> उन लोगों पर बरकत नाज़िल होगी कि जो लोग मेरी वजह से ईमान से नहीं भटकें।<sup>(23)</sup>”

जब याह्या<sup>(अ.स)</sup> के शागिर्द वहाँ से चले गए, तो ईसा<sup>(अ.स)</sup> ने लोगों को याह्या<sup>(अ.स)</sup> के बारे में बताना शुरू किया: “तुम लोग रेगिस्तान में क्या देखने गए थे? घास का एक तिनका जो हवा में उड़ रहा है? [a]<sup>(24)</sup> उन्होंने फिर पूछा, तुम लोग रेगिस्तान में क्या देखने गए थे? क्या वहाँ कोई अच्छे कपड़े पहने घूम रहा था? नहीं, जो लोग महंगे और अच्छे कपड़े पहनते हैं, वो लोग महलों में रहते हैं।<sup>(25)</sup>”

“तो तुम वहाँ क्या देखने गए थे? एक पैग़म्बर को? हाँ, याह्या<sup>(अ.स)</sup> एक पैग़म्बर हैं। लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ, वो उससे बढ़ कर हैं।<sup>(26)</sup> बहुत ज़माने पहले उनके बारे में लिखा गया था: ‘सुनो! मैं अपने पैग़ाम देने वाले को तुमसे पहले भेजूँगा। वो तुम्हारा रास्ता तैयार करेगा।’ [b]<sup>(27)</sup> मैं तुम्हें बताता हूँ, दुनियावी पैदाइश के मुताबिक़ कोई भी याह्या<sup>(अ.स)</sup> से ज़्यादा अजीम नहीं है। लेकिन जो इंसान अल्लाह ताअला की बादशाही में सब से छोटा है वो याह्या<sup>(अ.स)</sup> की अजीम पैदाइश से ज़्यादा अजीम है। [c]<sup>(28)</sup> जब लोगों ने ईसा<sup>(अ.स)</sup> की इस बात को सुना, उन सब ने यही कहा, “बेशक अल्लाह ताअला इन्साफ़परवर है।” यहाँ तक कि रोमी फ़ौज में काम करने वाले लोगों को भी ये बात सही लगी। ये वो लोग थे कि जिनको याह्या<sup>(अ.स)</sup> ने गुस्ल दिया था।<sup>(29)</sup> लेकिन फ़रीसी मज़हबी रहनुमा और जो लोग मूसा<sup>(अ.स)</sup> के कानून के आलिम थे उन लोगों ने अल्लाह ताअला की इस बात से इनकार कर दिया, क्योंकि उन्होंने याह्या<sup>(अ.स)</sup> से गुस्ल लेने से मना कर दिया था।<sup>(30)</sup>”

[a] हवा में लहराता हुआ घास का तिनका बादशाह हेरोदेस की निशानी था और वो उसके सिक्के पर फिर खुदा हुआ था। ईसा<sup>(अ.स)</sup> ने ये इसलिए कहा क्योंकि वो बादशाह हेरोदेस की तरफ़ इशारा कर रहे थे।

[b] तौरैत : मलाकी 3:1

[c] ईसा<sup>(अ.स)</sup> याह्या<sup>(अ.स)</sup> की बेइज़्जती नहीं कर रहे थे, बल्कि समझा रहे थे कि अल्लाह ताअला की बादशाही में छोटा होना इस जिस्मानी दुनिया में अजीम होने से बेहतर है। क्योंकि ईसा<sup>(अ.स)</sup> ने फ़रमाया कि अल्लाह ताअला की बादशाही में दाख़िल होने के लिए हमें दो बार पैदा होना पड़ता है: पहली बार माँ के पेट से और दूसरी बार

रुहानी तरीके से। (इंजील : यूहन्ना 3:1-8)